कहानीकार जयशंकर प्रसाद का इतिहास के प्रति मोह

Dr. Chitra Yadav*

Senior Assistant Professor, Hindi Department, K. K. P. G. College, Etawah (UP)

सार - हर रचना रचनाकार के मौलिक चिन्तन की अभिव्यक्ति है। भोगे हुए यथार्थ का प्रभाव उसपर पडना सहज है। यह उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का दस्तावेज भी है। मानव को सकारात्मक एवं सक्रिय बनाने में साहित्यकार का योगदान सराहनीय है। श्री जयशंकर प्रसादजी ऐसा एक साहित्यकार है जिन्होंने भारत के स्वर्णिम अतीत के पुनःसृजन करने का प्रयत्न किया है। उनकी रचनाएं इसके साक्षी है, प्रमाण है। साहित्यकार अतीत का निषेध नहीं करता बल्कि उसको अवश्य ग्रहण करता ह। अतीत याने विरासत के ठोस धरातल पर खड़े होकर वह वर्तमान एवं भविष्य पर दृष्टि डालता है। गोया कि अतीत का पुनर्मूल्यांकन करते हुए वर्तमान में खडे होकर भविष्य को गढने का जोखिम भरा काम करनेवाला है साहित्यकार द्य ये दरअसल महान साहित्यकार होते है। व्यास, वाल्मीकि, कालिदास से लेकर सारे हिन्दी साहित्य के जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्तत्रिपाठी निराला, मुक्तिबोध जैसे अनेक प्रतिभा के धनी रचनाकारों ने मानव को सही दिशा निर्देश करने का कार्य किया है। यह सिर्फ भारतीय साहित्य की खासियत ही नहीं विश्व साहित्य इसका गवाह है। स्वाधीनता परवर्ती भारतीय समाज समस्याओं की चुनौती में खड़ा हुआ है। निराशाग्रस्त एवं आश्रयहीन होकर जनता भटक रही थी। ऐसी एक विकट परिस्थिति में जनमानस के अन्तरंग को पहचानने में हिन्दी के बहुत सारे साहित्याकर सफल हुए है। जिनमें जयशंकर प्रसादजी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार है। कहानी, उपन्यास, काव्य, नाटक, जैसी सभी साहित्यिक विधाओं पर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी है। उनकी सृजनात्मकता की अपनी अलग विशेशषता है। उन्होंने मानव जीवन के यथार्थ को भारत के स्वर्णिम अतीत के साथ जोडने का सफल प्रयास किया है।

कुंजीशब्द – जयशंकर प्रसाद, इतिहास

----------------------------------X--------------------------------

परिचय

श्री जयशंकर प्रसादजी का जन्म काशी के गोवर्धन सराय मुहल्ले में श्सुंधानी साहुश् नाम से प्रतिष्ठित सम्माननीय वैभवशाली, उदात्त् और काव्यरसिक परिवार में माघ शुक्ल दशमी वि. सं. 1946 (सन् 1889) को हुआ था। पिता देवीप्रसाद थे और माता मुन्नीदेवी थी। बचपन पिता की छत्रछाया में आनन्द के साथ व्यतीत हुआ। वह सौभाग्य अधिक दिन स्थिर नहीं रह सका। दुर्भाग्य ने प्रसादजी पर चारों और से आक्रमण करना आरंभ किया। सन् 1901 में पिताजी का स्वर्गवास हो गया। इस पीडा को समझ भी नहीं पाये थे कि तीन वर्ष पश्चात् माता का भी देहावसान हो गया। इन सब के बीच भी प्रसादजी को अपनी भावनाओं के अनुकूल वातावरण और अन्तर्मुखी सहजवृत्तियों के प्रकाशन का अवसर मिला द्य इसने इनके मन में कवित्व के प्रति मोह एवं स्फुर्ति उत्पन्न की। वे भी अपने घर में आने जानेवाले विद्वानों की तरह समस्या पूर्ति की ओर प्रवृत्त हुए।

शिक्षा एवं साहित्यिक प्रेरणाः प्रसादजी की पढाई धनिकों के सदृश घर पर ही विशेष रूप में हुई। इनके पिता ने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी भाषाओं के अध्ययन के लिए विशेष व्यवस्था कर दी थी। शैशव में प्रसादजी को गोवर्धन सराय मुहल्ले में पढने के लिए भेजा गया। वहाँ पर आपने अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। वहीं पर संभवतः उनको कविता लिखने की प्रेरणा भी मिली।

तदनन्तर क्वींस कॉलेज में सातवीं तक की पढाई हुई। इस महत् व्यक्तित्व का दिया सन् 1937 को बुझ गया।

श्री रामनाथ सुमन ने प्रसादजी के जीवन-परिचय के संदर्भ में लिखा है संवत् 1957 में ग्यारहवें वर्ष के आरंभ में, अपनी माता के साथ इन्होंने धारा क्षेत्र, ओंकारेश्वर, पुष्कर, उज्जैन, जयपुर, व्रज, अयोध्या आदि की यात्रा की। धारा क्षेत्र की यात्रा में सघन वनमय अमरकण्टक पर्वतमाला के बीच नर्मदा की धारा पर इनकी नाव हिलती डुलती बढ रही थी तब प्रकृति की उस सुनसान उपत्यका में, विराट की उस गोद में इनके हृदय में

www.ignited.in

पहली बार एक अस्पष्ट उद्वेलन का अनुभव हुआ। संस्कार और समाज की अनुकूलता तो थी ही, इस तथा इसके वर्षों बाद की महोदधि भुवनेश्वर और पूरी की महानता एवं विशालता ने इनकी भावुकता को उत्तेजना दी।

कल्पना के पंख उन्मुक्त हो गये। अपने मन पर अमरकण्टक की यात्रा के प्रभाव का ये अब तक अनुभव करते हैं। इनके यहाँ बेनी, शिवदा तथा अन्य कितने ही कवि आया करते थे और अक्सर समस्यापूर्ति एवं कविता पाठ का अखाडा आधी-आधी रात तक चलता रहता था। ठंडाई बन रही है, रसगुल्ले और दूध-मलाई की हँडिया भरी है, कहीं डंड बैठक और कुश्ती का बाजार गर्म है, तो कहीं सभा चातुरी खिल-खिल हँस कर रही है, कहीं कवित्त पर कवित् चल रहे हैं, तो कहीं पंडितों से ज्ञान-चर्चा हो रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय, रचनाऐं और काव्य।
2. जयशंकर प्रसाद का इतिहास के प्रति मोह।

जीवन परिचय जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिन्दी कवि, नाटककार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य में एक तरह से छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में न केवल कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और कामायनी तक पहुँचकर वह काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया। बाद के प्रगतिशील एवं नई कविता दोनों धाराओं के प्रमुख आलोचकों ने उसकी इस शक्तिमत्ता को स्वीकृति दी। इसका एक अतिरिक्त प्रभाव यह भी हुआ कि खड़ीबोली हिन्दी काव्य की निर्विवाद सिद्ध भाषा बन गयी।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। वे एक युगप्रवर्तक लेखक थे जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित होने योग्य कृतियाँ दीं। कवि के रूप में वे निराला, पन्त, महादेवी के साथ छायावाद के प्रमुख स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैंय नाटक लेखन में भारतेन्दु के बाद वे एक अलग धारा बहाने वाले युगप्रवर्तक नाटककार रहे जिनके नाटक आज भी पाठक न केवल चाव से पढ़ते हैं, बल्कि उनकी अर्थगर्भिता तथा रंगमंचीय प्रासंगिकता भी दिनानुदिन बढ़ती ही गयी है। इस दृष्टि से उनकी महत्ता पहचानने एवं स्थापित करने में वीरेन्द्र नारायण, शांता गाँधी, सत्येन्द्र तनेजा एवं अब कई दृष्टियों से सबसे बढ़कर महेश आनन्द का प्रशंसनीय ऐतिहासिक योगदान रहा है। इसके अलावा कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने कई यादगार कृतियाँ दीं। विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करुणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन।

प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल 10, संवत् 1946 वि0 (तदनुसार 30जनवरी 1889ई0 दिन-गुरुवार) को काशी के सरायगोवर्धन में हुआ। इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू दान देने में प्रसिद्ध थे और एक विशेष प्रकार की सुरती (तम्बाकू) बनाने के कारण श्सुँघनी साहुश् के नाम से विख्यात थे। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने के लिये विख्यात थे। इनका काशी में बड़ा सम्मान था और काशी की जनता काशीनरेश के बाद श्हर हर महादेवश् से बाबू देवीप्रसाद का ही स्वागत करती थी। किशोरावस्था के पूर्व ही माता और बड़े भाई का देहावसान हो जाने के कारण 17 वर्ष की उम्र में ही प्रसाद जी पर आपदाओं का पहाड़ ही टूट पड़ा। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी, कुटुबिंयों, परिवार से संबद्ध अन्य लोगों का संपत्ति हड़पने का षड्यंत्र, इन सबका सामना उन्होंने धीरता और गंभीरता के साथ किया। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कालेज में हुई, किंतु बाद में घर पर इनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध किया गया, जहाँ संस्कृत, हिंदी, उर्दू, तथा फारसी का अध्ययन इन्होंने किया। दीनबंधु ब्रह्मचारी जैसे विद्वान् इनके संस्कृत के अध्यापक थे। इनके गुरुओं में श्रसमय सिद्धश् की भी चर्चा की जाती है।

रचनाएँ

उन्होंने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की।

काव्य रचनाएँ

जयशंकर प्रसाद की काव्य रचनाएँ हैं: कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना (1918), आंसू, लहर, कामायनी (1935) और प्रेम पथिक। प्रसाद की काव्य रचनाएँ दो वर्गो में विभक्त है: काव्यपथ अनुसंधान की रचनाएँ और रससिद्ध रचनाएँ। आँसू, लहर तथा कामायनी दूसरे वर्ग की रचनाएँ हैं। उन्होंने काव्यरचना ब्रजभाषा में आरम्भ की और धीर-धीरे खड़ी बोली को अपनाते हुए इस भाँति अग्रसर हुए कि खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में उनकी गणना की जाने लगी और वे युगवर्तक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

काव्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार श्कामायनीश् है। खड़ी बोली का यह अद्‌वितीय महाकव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। यह रूपक कथाकाव्य भी है जिसमें मन, श्रद्धा और इड़ा (बुद्धि) के योग से अखंड आनंद की उपलब्धि का रूपक प्रत्यभिज्ञा दर्शन के आधार पर संयोजित किया गया है। उनकी यह कृति छायावाद ओर खड़ी बोली की काव्यगरिमा का ज्वलंत उदाहरण है। सुमित्रानंदन पंत इसे श्हिंदी में ताजमहल के समानश् मानते हैं। शिल्पविधि, भाषासौष्ठव एवं भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से इसकी तुलना खड़ी बोली के किसी भी काव्य से नहीं की जा सकती है।

कहानी संग्रह

कथा के क्षेत्र में प्रसाद जी आधुनिक ढंग की कहानियों के आरंभयिता माने जाते हैं। सन् 1912 ई. में श्इंदुश् में उनकी पहली कहानी श्ग्रामश् प्रकाशित हुई। उन्होंने कुल 72 कहानियाँ लिखी हैं। उनके कहानी संग्रह हैं:

छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इन्द्रजाल।

उनकी अधिकतर कहानियों में भावना की प्रधानता है किंतु उन्होंने यथार्थ की दृष्टि से भी कुछ श्रेष्ठ कहानियाँ लिखी हैं। उनकी वातावरणप्रधान कहानियाँ अत्यंत सफल हुई हैं। उन्होंने ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक एवं पौराणिक कथानकों पर मौलिक एवं कलात्मक कहानियाँ लिखी हैं। भावना-प्रधान प्रेमकथाएँ, समस्यामूलक कहानियाँ लिखी हैं। भावना प्रधान प्रेमकथाएँ, समस्यामूलक कहानियाँ, रहस्यवादी, प्रतीकात्मक और आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उत्तम कहानियाँ, भी उन्होंने लिखी हैं। ये कहानियाँ भावनाओं की मिठास तथा कवित्व से पूर्ण हैं।

प्रसाद जी भारत के उन्नत अतीत का जीवित वातावरण प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। उनकी कितनी ही कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें आदि से अंत तक भारतीय संस्कृति एवं आदर्शो की रक्षा का सफल प्रयास किया गया है। उनकी कुछ श्रेष्ठ कहानियों के नाम हैं: आकाशदीप, गुंडा, पुरस्कार, सालवती, स्वर्ग के खंडहर में आँधी, इंद्रजाल, छोटा जादूगर, बिसाती, मधुआ, विरामचिह्न, समुद्रसंतरणय अपनी कहानियों में जिन अमर चरित्रों की उन्होंने सृष्टि की है, उनमें से कुछ हैं चंपा, मधुलिका, लैला, इरावती, सालवती और मधुआ का शराबी, गुंडा का नन्हकूसिंह और घीसू जो अपने अमिट प्रभाव छोड़ जाते हैं।

उपन्यास

प्रसाद ने तीन उपन्यास लिखे हैं। कंकाल, में नागरिक सभ्यता का अंतर यथार्थ उद्‌घाटित किया गया है। तितली में ग्रामीण जीवन के सुधार के संकेत हैं। प्रथम यथार्थवादी उन्यास हैं य दूसरे में आदर्शोन्मुख यथार्थ है। इन उपन्यासों के द्‌वारा प्रसाद जी हिंदी में यथार्थवादी उपन्यास लेखन के क्षेत्र में अपनी गरिमा स्थापित करते हैं। इरावती ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया इनका अधूरा उपन्यास है जो रोमांस के कारण ऐतिहासिक रोमांस के उपन्यासों में विशेष आदर का पात्र है। इन्होंने अपने उपन्यासों में ग्राम, नगर, प्रकृति और जीवन का मार्मिक चित्रण किया है जो भावुकता और कवित्व से पूर्ण होते हुए भी प्रौढ़ लोगों की शैल्पिक जिज्ञासा का समाधान करता है।

नाटक

प्रसाद ने आठ ऐतिहासिक, तीन पौराणिक और दो भावात्मक, कुल 13 नाटकों की सर्जना की। कामना और एक घूँट को छोड़कर ये नाटक मूलतः इतिहास पर आधृत हैं। इनमें महाभारत से लेकर हर्ष के समय तक के इतिहास से सामग्री ली गई है। वे हिंदी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। उनके नाटकों में सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना इतिहास की भित्ति पर संस्थित है। उनके नाटक हैं स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय का नाग यज्ञ, राज्यश्री, कामना, एक घूंट।

जयशंकर प्रसाद ने अपने दौर के पारसी रंगमंच की परंपरा को अस्वीकारते हुए भारत के गौरवमय अतीत के अनमोल चरित्रों को सामने लाते हुए अविस्मरनीय नाटकों की रचना की। उनके नाटक स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त आदि में स्वर्णिम अतीत को सामने रखकर मानों एक सोये हुए देश को जागने की प्रेरणा दी जा रही थी। उनके नाटकों में देशप्रेम का स्वर अत्यंत दर्शनीय है और इन नाटकों में कई अत्यंत सुंदर और प्रसिद्ध गीत मिलते हैं। श्हिमाद्रि तुंग शृंग सेश्, श्अरुण यह मधुमय देश हमारा जैसे उनके नाटकों के गीत सुप्रसिद्ध रहे हैं।

इतिहासः सामान्य अर्थ में

प्राचीन काल से ही इतिहास शब्द का प्रयेग सामान्य अर्थ में होता रहा है। अर्थात् इसका सम्बन्ध अतीत की घटनाओं और व्यक्तियों से होने के कारण इसे नाम, घटना और तिथियों से जोड़ा जाता रहा है।

डा. गोविन्दजी के अनुसार इस समय तक इतिहास का सम्बन्ध वैयक्तिक उद्देश्यों की चर्चा के साथ प्रेम, घृणा, युद्ध, ह्रास एंव पतन आदि की कहानी होती थी प्राचीन इतिहास लेखकों के सम्मुख इतिहास प्रधानतः व्यक्तिपरक था और सम्राटों, राजनीतिज्ञों सेनापतियों एवं महत्वपूर्ण तेजस्वी पुरुषों के विविध क्रिया कलापों का लेखा जोखा मात्र था। कालान्तर में इतिहास संबंधी इस दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ

और इतिहास का सम्बन्ध केवल विशिष्ट एवं प्रभावशाली व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं रहा। व्यक्ति से आगे बढकर इसने देश और समाज, सामान्यजन की जीवन दशा, उनमें होनेवाले विविध परिवर्तनों, समाज को परिचालित करनेवाली विचार पद्धतियों एवं उनसे उत्पन्न शासन तन्त्रों तथा उनमें परिवर्तन लानेवाली भौतिक परिस्थितियों को भी अपने में अन्तर्भुक्त 1. हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास प्रयोग डॉ. गोविन्दजी कर लिया। आज का इतिहास वास्तव में, मानव समाज की कहानी है, उसकी विविधता एवं संपूर्णता की विकसनशील धारा है।

इतिहास व्यापक अर्थ में व्यापक रूप में पृथ्वी पर रहनेवाले मानव तथा मानवेतर प्राणियों से संबंधित घटित घटना ही इतिहास है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मानव की तरह पृथ्वी पर रहनेवाली सभी वस्तुओं का अपना एक इतिहास है। किन्तु जब कोई व्यक्ति, चाहे वह सामान्य ही क्यों न हो, बिना किसी व्याख्यात्मक संदर्भ के, इतिहास की बात करता है तब ऐसा अनुमान कर लिया जाता है कि उसका संकेत अपने जातीय रिकार्डों अर्थात पृथ्वी पर मानवता के विकास की कथा की ओर है। कथा और इतिहास बहुत कुछ एक दूसरे के समीप और उनकी प्रकृति में एक सीमा तक साम्य है।

इतिहासः प्रचलित अर्थ

आजकल इतिहास शब्द का प्रयोग प्रायः तीन अर्थों में किया जाता है। प्रथम इसके अंग्रेजी पर्याय हिस्टरी के व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ में, जिसका तात्पर्य है गवेषण या गवेषणा से प्राप्त जानकारी अथवा गवेषण की किसी प्रक्रिया से उपलब्ध ज्ञान द्वितीय घटनाओं के वास्तविक क्रम को, द्योतित करने के लिए इतिहास शब्द का प्रयोग होता है। तीसरे और महत्वपूर्ण अर्थ में इतिहास शब्द का जो प्रयोग होता है, वह विश्व के या उसके कुछ अंशों के घटना प्रवाह का उल्लेखन है।

इतिहासः रचना प्रक्रिया

कोई भी इतिहास, चाहे वह इतिवृत्तात्मक हो अथवा साँस्कृतिक अपने साधन स्रोतों तथा प्रमाणों से परिसीमित होता है और उन्हीं के आधार पर इतिहासकार इतिहास की संरचना में एक नहीं, अनेक तत्वों का योग रखते है जो कालभेदानुसार बदलते रहते हैं। इतिहास के विकास के साथ उसके साधनों का भी विकास होता रहता है। ध्यान देने की बात है, आज इतिहास की खोजों के बावजूद भी कालिदास और विक्रमादित्य के संबंध में इतिहासकार के निर्णयों का एक बहुत बड़ा भाग किंवदन्तियों, जनश्रुतियों और लोक कथाओं पर ही आधृत है। इतिहास-रचना के आधारभूत उपकरणों में साहित्य कृतियों का अपना विशिष्ट स्थान है। इतिहासकार की रचना पद्धति के दो प्रधान अंग

प्रथम उपलब्ध सामग्री का अध्ययन, परीक्षा एवं निष्कर्ष निकालना तथा द्वितीय, उस उपलब्ध सामग्री की व्याख्या एवं उसके आधार पर घटनाओं का धारावाहिक विवरण प्रस्तुत करना। पहली प्रक्रिया एक सीमा तक यान्त्रिक है और विज्ञान की कोटि में आती है, किन्तु दूसरी में संगति एवं संभावनाबद्ध कल्पना का स्थान प्रधान है। प्रस्तुत सामग्री का अध्ययन एवं परीक्षण करते समय इतिहासकार की विशुद वैज्ञानिक होती है प्रस्तुत सामग्री विश्वसनीय है या नहीं, जिन साधारण तथ्यों की स्थापना की गयी है, वे न्याय-संगत है या नहीं। किन्तु इतिहास के इन प्राप्त उपकरणों एवं सामग्रियों से तथ्यों और निष्कर्ष का संग्रह स्वयं में इतिहास नहीं है। वह इतिहास तभी बनता है जब इतिहासकार उन उपकरणों से प्राप्त तथ्यों के बीच की अज्ञात कड़ियों को जोड देता है।

जीवन में जो व्यवस्था है, इतिहास अपने आप उससे श्रेष्ट कोई सिस्टम, कोई व्यवस्था नहीं बन सकता। आलोचकों का यह तर्क रहा कि विज्ञान की आधारभूत सामग्री के विपरीत इतिहास की सामग्री अनिश्चित और अनिर्धारणीय होती है। इतिहास के तथाकथित तथ्य का प्रत्यक्ष निरीक्षण नहीं हो सकता है। प्रयोग असंभव है। प्रत्योक ऐतिहासिक घटना अपने ढंग की अकेली होती है। और किसी भी स्थिति में उसको पुनरावृत्ति नहीं कराया जा सकता। साहित्यिक इतिहासकारों की यह भी धारणा थी कि इतिहास विज्ञान हो या न हो वह कला अवश्य है। विज्ञान अन्वेषण तथा अनुसन्धान द्वारा अधिक से अधिक इतिहास का कंकाल ही प्रस्तुत कर सकता है। उसमें प्राण प्रतिष्ठा करने तथा सजीव बनाने के लिए साहित्यकार की कल्पना आवश्यक है। और जब कंकाल एक बार सजीव हो जाता है तो उसे सुरुचिपूर्ण परिधान देने एवं प्रभावशाली बनने के लिए कुशल लेकक की निपुणता आवश्यक है।

इतिहास और इतिहास का आभास

जहाँ लेखक भग्नावशेषों में जाकर इतिहास के पुनर्निर्माण का प्रयत्न करता है, उसकी कल्पना और भी सक्रिय होती है। वास्तव में यहाँ इतिहास नहीं उसका आभास मात्र है और इस आभास में से एक अद्भुत कहानी प्रस्तुत होती है। इतिहास की ओर लेखक की प्रवृत्ति मानव के सहज आकर्षण से है। जब वह इतिहास गौरवमय होता है तो उसका 1. हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास प्रयोग-डॉ. गोविन्दजी आकर्षण और भी बढ़ जाता है। लेखक वर्तमान का ऐतिहासिक साधना से सम्बन्ध सूत्र जोडना चाहता है। उसमें भविष्य की उसकी आश

आकाँक्षाएँ प्रतिबिम्बित है। इतिहास राष्ट्रीय भावना को भी उत्तेजित करता है। प्रसादजी का इतिहासदर्शन, इतिहास संबंधी और ऐतिहासिक प्रवृत्ति के मूल उद्देश्य संबंधी उनकी मान्यताओं को पुष्ट कर देता है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के शब्दों में, इतिहास की सूखी रूपरेखा पर तत्कालीन व्यापक उन्नति या अवनति के कारणों और रहस्यों का रंग चढा देते हैं। व्यक्तियों और समूहों की प्रवृत्तियों का ही नहीं, उन विचारधाराओं का भी उल्लेक करते हैं जिनका सामयिक जीवन के निर्माण में हाथ रहा है। इस प्रकार जीवन की अन्तःप्रेरणा दर्शन को और बहिर्विकास इतिहास को मानकर वे दोनों का घनिष्ट संबंध स्थापित कर देते है।

इतिहास और ऐतिहासिक कहानी

ऐतिहासिक शब्द इतिहास शब्द का विशेण रूप है और इसका अर्थ बनाता है इतिहास से उत्पन्न या इतिहास से संबन्ध। प्राचीन भारतीय चिन्तन में चाहे आधुनिक ऐतिहासिक दृष्टि का अभाव हो फिर प्राचीन भारतीय चिन्तन में चाहे आधुनिक ऐतिहासिक दृष्टि का अभाव हो फिर भी प्राचीन भारतीय इतिहास साहित्य में कथावस्तु का आधार प्रचुरता से ग्रहण किया गयै था। प्राचीन ऐतिहासिक काव्य, कथा-आख्यायिकाएँ, नाटक आदि आज के इतिहासकार के लिए इतिहास के स्रोत है तो आधुनिक ऐतिहासिक कथाकार के लिए इतिहास ही अपना प्रमुख आधार है।

हिन्दी की ऐतिहासिक कहानियाँ

हिन्दी में ऐतिहासिक कहानियों की संख्या अतिविपुल नहीं है। इतिहास के आधार पर लिखी हुई बहुत सी कहानियों में तत्कालीन सामाजिक साँस्कृतिक परिस्थिति का सजीव, संपूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं है। उनमें उस परिस्थिति से पात्रों के भाव विचारों और जीवन की घटनाओं को जोडते हुए ऐतिहासिक रचना का काल्पनिकता का बोध कराने का प्रयास भी कम किया गया है।

वृन्दावनलाल वर्मा ने हिन्दी की प्रथम ऐतिहासिक कहानी श्राखीबन्द भाईश् 1909 में लिखी। वे हिन्दी में ऐतिहासिक कहानी के जनक माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, सुदर्शन और प्रेमचन्द भी हिन्दी के प्रसद्धि ऐतिहासिक कहानीकार ही है। वृन्दावनलाल वर्मा की राखी बन्द भाई तथा खजुराहो की दो मूर्तियाँ आदि कहानियों में ऐतिहासिक तथ्यों के प्रति रसमय निष्टा तथा पुनरुत्थान की भावना है।

अमरकान्त की कम्यूनिस्ट, मौत का नगर, डिप्टी कलक्टरी, जिन्दगी और जोंक, दोपहर का भोजन आदि कहानियाँ ऐतिहासिक संस्पर्श रखती है। ज्ञानरंजन की मनहूस बंगला, गोपनीयता, दिवास्वप्न आदि भी ऐतिहासिक कहानियों के अन्दर रखी जा सकती है। हृदयेश की पहली कहानी भी उल्लेख्य है। सतीश जमाली का नाम भी इस प्रसंग में स्मरणीय है।

उसका समग्र व्यकित्तव, रुचियाँ, संस्कार और परंपरा है।

प्रसादजी में अन्य साहित्यकारों की अपेक्षा रचनात्मक कल्पना और वैयक्तिक प्रतिभा देखी जाती है, वै किसी भी मात्रा में अनुकरमजन्य नहीं है। उन सब में प्रसादजी का अपना चिंतन, देश की परंपरा तथा आधुनिक युगबोध का समाहार है। प्रसादजी ने अपनी कहानियों में ऐतिहासिक तथ्यों को क्रियात्मक कल्पना एवं वैयक्तिक प्रतिभा द्वारा ऐसा है कि ऐतिहाकि तथ्यों की रक्षा होते हुए भी वे उनकी अपनी मौलिकता का समाहार बन गयी है। इनमें राष्ट्रीय भावना, भारतीय संस्कृति, प्रेम भावना, कल्पना, दर्शन और जीवन दर्शन आदि कुछ ऐसी मुख्य विशेषताएँ हैं जो अधिक मात्रा में प्रकट है। इन के बारे में हम यहाँ विचार करेंगे।

प्रसादजी की कहानियों में राष्ट्रीय भावना

राष्ट्र

राष्ट्रीयता के स्वरूप को समझने के लिए राष्ट्र के विषय में समझ हासिल कर लेना अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी में राष्ट्र शब्द का उपयोग अंग्रेजी के नैशन शब्द के अर्थ में होता है। जिस देश के लोग विशिष्ट भाषा द्वारा विचार विनिमय करते हैं वह स्थान विशेष ही राष्ट्र है। कह सकते हैं कि उस विशेष भूखण्ड पर निवास करनेवाला जन समाज जिसकी अपनी सभ्यता तथा संस्कृति हो, अपनी इतिहास और धर्म हो, अपने सामान्य रीति रिवाज एवं आचार व्यवहार हो, राष्ट्र है। किसी जन समूह को तब तक राष्ट्र नहीं कहा जा सकता, जब तक उनमें एकता की विशिष्ट चेतना विद्यमान नहीं है।

राष्ट्रीयता

राष्ट्र से संबद्ध प्रेम, आचार विचार, व्यवहार और भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। यह एक ऐसी भावना है, जिसका संबंध मनुष्य की अंश चेतना से है। राष्ट्रीयता का शुभ और श्रेयस्कर रूप किसी में राष्ट्र के वासियों की सामाजिकता के उस व्यापक संदर्भ को ही मानना उचित है जो न केवल नागरिक के रूप में उस राष्ट्र के वासियों की कर्तव्यरायणता का बोध कराये बल्कि उनके व्यक्ति रूप की उपलब्धियों के प्रति राष्ट्र का आह्वान भी कर सके। देश भक्ति अथवा राष्ट्रीय भवना को एक तीव्र और शक्तिशाली भावना के रूप में मानते हुए रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं यदि किसी को अपने देश से प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु पक्षी, लता, गुल्म, पेड, पत्ते, वन पर्वत, नदी,

www.ignited.in

निर्झर सबके प्रमे होगा, सब को वह चाह भरी दृष्टि से देखेगा, सब की सुध करके वह विवश में आँसू बहायेगा।

राष्ट्रीयता क्षेत्र

राष्ट्रीयता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और यह एक गतिशील धारा है। यह, विशिष्ट समूह में पाई जानेवाली एक ऐसी चेतना है, जिसके कारण वह समूह से अपनी पृथक सत्ता की अनुभूति करता है। इसके मूल में देश भक्ति बीतरूप में सुरक्षित रहती है। जो व्यक्ति इन भावना से उत्तेजित है वह राष्ट्र के हित के आगे अपने परिवार, जाति आदि को भी गौण मानता है, और देश के लिए मर मिटने में अपने को धन्य समझता है

भौगेलिक एकता

भौगोलिक एकता से अर्थ है, भौगोलिक दृष्टि से विशिष्ट एवं निश्चित भू भाग का होना। भौगोलिक विशिष्ट एकता का प्रभाव व्यक्तियों के शारारिक गठन तथा सामाजिक जीवन पर पड़ता है। इस एकता जन्य प्रभाव के कारण एक ही भू भाग के निवासी परस्पर सहोयग की विशिष्ट भावना रखते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें वह भू भाग, वहाँ की मिट्टी, उस मिट्टी की पौदावार, सस्यलता, वहाँ के मनुष्य, जल, वायु पत्थर-चट्टान सबसे एक विशिष्ट पारस्परिकताजन्य प्रेम व सहज भावना का उदय एवं उसे बनाये रखने की तीव्र भावना की अभिलाषा मुख्य है।

जातीय एकता

जाति उस समुदाय को कहते है जिसके सदस्यों में परस्पर समान मानने की प्रवृत्ति हो। जाति की एकता जाति के गौरव का अनुभव करती है, जो राष्ट्र के कल्याण के लिए योगदान देती है। किसी विदेशी आक्रमण या ऐसी ही किसी अन्य स्थिति से राष्ट्र के खंडित होने की संभावना उठती है तब देश की जातियों में पूर्ण महत्व एवं ममत्व की भावना आ जाती है। एक ही जाति के लोगों में परस्पर अधिक सहयोग की भावना अधिक सुगमतापूर्वक पनपती है। यह राष्ट्रीयता की भावना को तीव्र एवं तीक्ष्ण बनाती है।

निबंध

प्रसाद ने प्रारंभ में समय समय पर श्इंदुश् में विविध विषयों पर सामान्य निबंध लिखे। बाद में उन्होंने शोधपरक ऐतिहासिक निबंध, यथा: सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्य, प्राचीन आर्यवर्त और उसका प्रथम सम्राट् आदि: भी लिखे हैं। ये उनकी साहित्यिक मान्यताओं की विश्लेषणात्मक वैज्ञानिक भूमिका प्रस्तुत करते हैं। विचारों की गहराई, भावों की प्रबलता तथा चिंतन और मनन की गंभीरता के ये जाज्वल्य प्रमाण हैं।

पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद को श्कामायनीश् पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था।

बहुमुखी प्रतिभा

प्रसाद जी का जीवन कुल 48 वर्ष का रहा है। इसी में उनकी रचना प्रक्रिया इसी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में प्रतिफलित हुई कि कभी-कभी आश्चर्य होता है। कविता, उपन्यास, नाटक और निबन्ध सभी में उनकी गति समान है। किन्तु अपनी हर विद्या में उनका कवि सर्वत्र मुखरित है। वस्तुतः एक कवि की गहरी कल्पनाशीलता ने ही साहित्य को अन्य विधाओं में उन्हें विशिष्ट और व्यक्तिगत प्रयोग करने के लिये अनुप्रेरित किया। उनकी कहानियों का अपना पृथक् और सर्वथा मौलिक शिल्प है, उनके चरित्र-चित्रण का, भाषा-सौष्ठव का, वाक्यगठन का एक सर्वथा निजी प्रतिष्ठान है। उनके नाटकों में भी इसी प्रकार के अभिनव और श्लाघ्य प्रयोग मिलते हैं। अभिनेयता को दृष्टि में रखकर उनकी बहुत आलोचना की गई तो उन्होंने एक बार कहा भी था कि रंगमंच नाटक के अनुकूल होना चाहिये न कि नाटक रंगमंच के अनुकूल। उनका यह कथन ही नाटक रचना के आन्तरिक विधान को अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्व कर देता है। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास-सभी क्षेत्रों में प्रसाद जी एक नवीन स्कूल और नवीन जीवन-दर्शन की स्थापना करने में सफल हुये हैं। वे छायावाद के संस्थापकों और उन्नायकों में से एक हैं। वैसे सर्वप्रथम कविता के क्षेत्र में इस नव-अनुभूति के वाहक वही रहे हैं और प्रथम विरोध भी उन्हीं को सहना पड़ा है। भाषा शैली और शब्द-विन्यास के निर्माण के लिये जितना संघर्ष प्रसाद जी को करना पडा है, उतना दूसरों को नही।

छायावाद की स्थापना

जयशंकर प्रसाद ने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई। वे छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीतों के लिखनेवाले श्रेष्ठ कवि भी बने। काव्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार कामायनी है। खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। यह रूपक कथाकाव्य भी है जिसमें मन, श्रद्धा और इड़ा (बुद्धि) के योग से अखंड आनंद की उपलब्धि का रूपक

प्रत्यभिज्ञा दर्शन के आधार पर संयोजित किया गया है। उनकी यह कृति छायावाद ओर खड़ी बोली की काव्यगरिमा का ज्वलंत उदाहरण है। सुमित्रानन्दन पंत इसे श्हिंदी में ताजमहल के समानश् मानते हैं। शिल्पविधि, भाषासौष्ठव एवं भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से इसकी तुलना खड़ी बोली के किसी भी काव्य से नहीं की जा सकती है। जयशंकर प्रसाद ने अपने दौर के पारसी रंगमंच की परंपरा को अस्वीकारते हुए भारत के गौरवमय अतीत के अनमोल चरित्रों को सामने लाते हुए अविस्मरनीय नाटकों की रचना की। उनके नाटक स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त आदि में स्वर्णिम अतीत को सामने रखकर मानों एक सोये हुए देश को जागने की प्रेरणा दी जा रही थी। उनके नाटकों में देशप्रेम का स्वर अत्यंत दर्शनीय है और इन नाटकों में कई अत्यंत सुंदर और प्रसिद्ध गीत मिलते हैं। श्हिमाद्रि तुंग शृंग सेश्, श्अरुण यह मधुमय देश हमाराश् जैसे उनके नाटकों के गीत सुप्रसिद्ध रहे हैं।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसादजी का महत्व ऐतिहासिक और कहानी लेखक दोनों दृष्टियों से अधिक है। अपनी ऐतिहासिक कहानियों में उन्होंने भारतीय संस्कृति का गौरवगान किया। भारतीय इतिहास में से साँस्कृतिक नवमूल्यन के परिणामें को बराबर बल प्रदान कर प्रसादजी ने समाज को भावी विनाश से बचाने का प्रयास भी किया। साँस्कृतिक अवमूल्यन से प्रसादजी व्यथित थे। परिणामस्वरूप ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर भारतीय चेतना में साँस्कृतिक गौरव को पुनः जागृत करने का प्रयास किया। वे विशुद्ध इतिहास नहीं लिख रहे थे। इतिहास और संस्कृति को समन्वित कर पूर्ण युगबोध स्पष्ट कर रहे थे। उनकी दृष्टि मूलतः राष्ट्रीय चेतना पर केन्द्रित है। अपनी रचनाओं के माध्यम से वे भारतीय इतिहास के कुछ पृष्ठों की खोज, पहचान और पुनर्वचन करते हों तो उसका लक्ष्य मात्र अतीत के गौरव का स्मरण नहीं रह जाता, बल्कि पुनर्जागरण के परिप्रेक्ष्य में भारत के ऐतिहासिक संकट का रेखांकन भी हो जाता है। प्रसादजी की ऐतिहासिक हो या यथार्थ पर, सामाजिक हो या छायावादी, प्रतीकात्मक हो या अन्य किसी प्रकार की भारत में अंग्रेजों के दमर चक्र से पराभुत भारतीय जनता और दासता की त्रासदी को प्रसादजी ने देखा और अनुभव किया। इस दासता से मुक्ति के लिए उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सोई हुई राष्ट्रीय चेतना को जगाने का प्रयास किया। गाँधीजी के अहिंसात्मक आन्दोलन को केन्द्र बिन्दु बनाकर अंग्रेजें के विरुद्ध भारतीय जनता को जाग्रत कराने का प्रयास किया। आरंभिक कहानियों में देश की दुर्दशा का वर्णन अधिक है तो, इनकी परवर्ती कहानियों में आक्रोश का स्वर तीखा है। आम तौर पर प्रसादजी प्रेम, कल्पना तथा विगत के साहित्यकार कहे जाते हैं, लेकिन वे जीवन के मूलभूत सुख स्वतंत्रता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, अपने समय से जुड़े हैं, यथार्थ की धरती पर चलते हैं राष्ट्र की सामान्य धारा में सम्मिलित है, साथ ही नव जागरण का झण्डा लेकर चलते भी हैं। इनकी कहानियों का मूल स्वर जातीय गौरव की स्थापना, देशभाक्ति की भावनाओं का उद्रेक और वर्तमान के लिए अतीत के प्रासंगिक पहलुओं को टटोलना है। इसीलिए इन ऐतिहासिक कहानियों में देशभाक्ति, वीरता और साहस के साथ रोमांस भी है।

संदर्भ

1. काशी का इतिहास मोतीचन्द। श्यमपक्राशन फिल्मी कोलनी चोडा रास्ता जयपुर 30203003, 1997।

2. हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास प्रयोग डॉ. गोविन्दजी, 15063, कल्पना प्रकाशन, मेरट, 1974।

3. छायावाद काव्य तथा दर्शन डॉ. हरनारायणसिंह। ग्रन्थम प्रकाशन कानपूर 1964।

4. मानवीय संस्कृति का रचनात्मक आयाम डॉ. रघुवंश नाषणल पब्लिकेशन्स नई दिल्ली - 1990।

5. प्रसाद चिन्तन संपादिका विमला गुप्ता सेठ सूरज जालान गलर कॉलेज कोलकत्ता - 1990।

6. भारतीय संस्कृति और समाज शंभूरत्न त्रिपाठी सितंबर 1970, किताब घर, आचार्य नगर, कानपूर।

7. प्रसाद आलोचनात्मक सर्वेक्षण श्री रामप्रसाद मिश्र साहित्य रत्नमाला कार्यालय बनारस।

8. मानव और संस्कृति श्याम चरण दुबे संस्करण 1969, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

9. हिन्दी कहानी समाज शास्त्रीय दृष्टि डॉ. रघुवीर सिन्हा संस्करण 1977, अक्षर प्रकाशन प्राः लि दिल्ली।

10. समाज दर्शन डॉ. रामनाथ शर्मा, 1978-79, केदरनाथ रामनाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ।

11. कर्म और समाज डॉ. राधाकृष्णन, संसकरण, 1963, राजपाल एण्ड सण्स, दिल्ली।

12. प्रसाद साहित्य की अन्तःचेतना सूर्यप्रसाद दीक्षित भारतीय ग्रन्थ निकेतन नई दिल्ली।

Corresponding Author

Dr. Chitra Yadav*

Senior Assistant Professor, Hindi Department, K. K. P. G. College, Etawah (UP)